प्रेक्षण विधि

Unit-I
B.A (Hons) Part-I
[illegible]
[illegible] Psychology [illegible]

प्रश्न :- प्रेक्षण विधि से आप क्या समझते हैं? इसकी समालोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत करें। अथवा इसके लाभ एवं सीमाओं (गुणात्मा दोषों) को लिखें।

प्रत्येक विज्ञान की कुछ निश्चित विषय वस्तु तथा अध्ययन की विधियाँ होती हैं। मनोविज्ञान एक समर्थक विज्ञान जिसकी दूसरी प्रमुख विधि प्रेक्षण विधि है। इस विधि का आगमन अन्तर्निरीक्षण विधि के विरोध में हुआ। प्रेक्षण का सामान्य अर्थ अवलोकन अथवा देखना होता है। व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार "मनोविज्ञान प्राणी के व्यवहारों (आन्तरिक और बाह्य क्रियाओं) का अध्ययन करता है तथा इन व्यवहारों की अध्ययन की वैज्ञानिक विधि प्रेक्षण विधि अथवा निरीक्षण विधि है। अब प्रश्न उठता है कि प्रेक्षण कहते किसे हैं?

"प्रेक्षण मनोविज्ञान की दूसरी प्रमुख विधि है, जिसमें प्राणी के व्यवहारों का अध्ययन भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में तटस्थ भाव से किया जाता है।" लगभग इसी आशय की परिभाषा अधिकांश मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई है। मोसर के अनुसार अवलोकन वैज्ञानिक अन्वेषण की एक शास्त्रीय विधि है।"
प्रेक्षण की एक सामान्य (Common) परिभाषा निम्नवत है!-

"प्रेक्षण विधि से तात्पर्य मनोविज्ञान की उस विधि से है जिसमें प्राणी के व्यवहारों अथवा चारित्र कारकाओं का अध्ययन तटस्थ भाव से विभिन्न परिस्थितियों में की आँखो अथवा कुछ उपकरणों के माध्यम से किया जाता है तथा भिन्न-भिन्न परिस्थितियों से प्राप्त आँकड़ो का विश्लेषण कर एक सामान्य (Common) निष्कर्ष निकाला जाता है।"
अभी तक की व्याख्या से निरीक्षण अथवा प्रेक्षण का जो स्वरूप स्पष्ट होता है उसे निम्नप्रकार व्यक्त किया जा सकता है!—

1.) प्रेक्षण मनोविज्ञान की एक प्रमुख विधि है।
2.) यह मनोविज्ञान की दूसरी प्रमुख विधि है।
3.) इसका जन्म व्यवहारवाद से हुआ।
4.) यह अन्तःनिरीक्षण के विरोध में अस्तित्व में आया।
5.) यह प्राणी के व्यवहारों का अध्ययन ठीक उसी रूप में करता है जिस रूप में घटित होता है।
6.) इसमें अध्ययनकर्ता पूर्णतः तटस्थ अथवा निष्पक्ष रहता है।
7.) प्राणी के व्यवहारों का अध्ययन भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में किया जाता है।
8.) प्रत्येक बार के व्यवहार पैटर्न की सामानता के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है।

(ग) स्वाभाविक प्रेक्षण :- स्वाभाविक परिस्थिति में प्राणियों के व्यवहारों, विशेषकर पशुओं के व्यवहारों के अध्ययन में प्रेक्षण के इस प्रारूप को अपनाया जाता है। पशुओं में आक्रमकता, प्यार आदि व्यवहार का अध्ययन में लाभप्रद है। मानव शिशुओं के व्यवहारों का भी अध्ययन इस विधि से किया जाता है। अध्ययन की परिस्थिति बिल्कुल नैसर्गिक होते हैं। इस तरह के प्रेक्षण में किसी भी तरह का जोड़-तोड़ या बदलाव नहीं होता है। इसीलिए इसे क्रमबद्ध निरीक्षण (Systematic obsor) या क्षेत्र अध्ययन विधि (Field study method) भी कहा जाता है।

प्रेक्षण विधि की विशेषताएँ अथवा गुण :- प्रेक्षण विधि की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं जिसके कारण आज भी प्रासंगिक हैं :-

(1) वस्तुनिष्ठ विधि :- इस विधि में वस्तुनिष्ठता का गुण पाया जाता है। निरीक्षणकर्ता किसी भी घटना या व्यवहार का अध्ययन तटस्थभाव से करता है। अपने तरफ से कोई विशेष जोड़-तोड़ नहीं करता है। इसमें अनुमान की कोई भी गुंजाइश नहीं होती है क्योंकि अध्ययनकर्ता जो भी देखता है उसी के आधार पर निष्कर्ष निकालता है। इसलिए प्राप्त परिणाम अधिक विश्वसनीय होता है। इस कसौटी पर यह अन्तर्निरीक्षण विधि की तुलना में अधिक वस्तुनिष्ठ और अवैयक्तिक है। अतः हम इसे एक वैज्ञानिक विधि कह सकते हैं।

(2.) विस्तृत अध्ययनक्षेत्र :- इस विधि का प्रयोग हम बच्चों, अनपढ़ों, सयानों के अतिरिक्त पशु पक्षियों के व्यवहारों के अध्ययन के लिए भी कर सकते हैं। स्पष्ट है कि इस विधि ने मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र को काफी विस्तार दी है। कुछ ऐसी व्यवहारें जो परिस्थितिजन्य होती हैं तथा जंगली-पशुओं के व्यवहारों का अध्ययन प्रयोग विधि से भी संभव नहीं है। जैसे साम्प्रदायिक दंगे, वर्गसंघर्ष आदि में मानव-व्यवहार का अध्ययन इस विधि से संभव है।

(3) प्रमाणीकरण :- इस विधि में प्रमाणीकरण का गुण भी पाया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि निरीक्षणकर्ता का निष्कर्ष कितना सही है? इसकी जाँच कोई दूसरा निरीक्षण कर्ता भी अपने ढंग से कर सकता है। इस आधार पर यह विधि अन्तर्निरीक्षण विधि से अधिक वैज्ञानिक विधि है।

(7) वर्तमान में अध्ययनकर्ता आवश्यकतानुसार कुछ उपकरणों का मदद भी लेते हैं।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि "स्वाभाविक परिस्थितियों में तटस्थ भाव से किया गया अध्ययन को प्रेक्षण कहते हैं।"

प्रेक्षण के प्रकार

प्रेक्षण विधि तीन प्रकार के होते हैं जिन्हें व्यवहार के निरीक्षण में आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जाता है:—

(क) सहभागी प्रेक्षण (Participant Observation)
(ख) असहभागी प्रेक्षण (Non-Participant Observation)
(ग) स्वाभाविक प्रेक्षण (Naturalistic Observation)

(क) सहभागी प्रेक्षण :- सहभागी प्रेक्षण में अध्ययनकर्ता सक्रिय भूमिका निभाता है। वह अध्ययन की जानेवाले समूह का एक सदस्य बनकर समूह के सदस्यों के साथ घुल मिलकर अपने विश्वास में ले लेता है। समूह के व्यवहारों का बारीकी से अध्ययन करता है। पी० भी० यंग (1966) के अनुसार " सहभागी निरीक्षक अनियंत्रित प्रेक्षण का व्यवहार करते हुए उसी समूह जीवन में रहता है, जिसका वह अध्ययन करता है।" जैसे आदिवासियों के व्यवहारों का अध्ययन करने के लिए अध्ययनकर्ता आदिवासियों की तरह अपना वेश-भूषा धारण करता है और अपने को आदिवासी समाज का हितैषी दर्शाते हुए उस समाज से अध्ययन से सम्बन्धित स्रोत एकत्रित करते रहता है। उस समाज में घुल मिल जाता है तथा मकसद पूरा हो जाने पर समाज छोड़कर वापस चला जाता है। इस तरह यह स्पष्ट है कि किसी विशेष समूह अथवा समाज के व्यवहारों के अध्ययन में सहभागी प्रेक्षण एक कारगर विधि है।

(ख) असहभागी प्रेक्षण :- इस प्रकार के प्रेक्षण में प्रेक्षक दूर से अध्ययन करता है। यानि उस समूह का सदस्य नहीं बनता है। यद्यपि जिस समूह के व्यवहारों का अध्ययन करता है उस समूह में की क्रियाकलापों का अध्ययन करते रहता है और इसके लिए सूचना इकट्ठा करते रहता है। उस समूह के सदस्यों को इस बात की जानकारी रहती है कि उनके व्यवहारों का अध्ययन किया जा रहा है। अध्ययन करने वाला व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार उस समूह में जाता है और सूचना एकत्रित करके लौट जाता है। वह समूह के सदस्यों के कार्यों में किसी प्रकार से हाथ नहीं बँटाता है। नैदानिक, औद्योगिक और शैक्षणिक परिस्थितियों में व्यवहारों का अध्ययन इसी विधि से किया जाता है। स्पष्ट है कि प्रेक्षण के उपर्युक्त दोनों प्रकार एक दूसरे के पूरक हैं।

(1) नियंत्रण का अभाव :- इस विधि द्वारा किया गया अध्ययन अनियंत्रित परिस्थिति में होता है। अतः किसी परिणाम के पीछे के कारणों का ठीक-ठीक जानकारी नहीं मिल पाती है। यानि कारण है परिणाम संबंध की सही जानकारी नहीं मिल पाते हैं। निश्चित तौर पर यह कहना संभव नहीं है कि अमुक व्यवहार के पीछे अमुक कारण ही उत्तरदायी है। जैसे कोई रोते हुए बच्चे के व्यवहार को देखकर यह निष्कर्ष निकालना की वह भूख से रो रहा है - गलत हो सकता है। हो सकता है कि उसके रोने की वजह कोई दूसरा जैसे पेट दर्द, बुखार, भूख कुछ भी हो सकता है।

(2) अध्ययनकर्ता की वैयक्तिक कारकों का प्रभाव :- इस विधि पर अध्ययनकर्ता के व्यक्तिगत कारकों यथा- मनोवृत्ति, पूर्वाग्रह, आवश्यकता आदि का प्रभाव पड़ सकता है जिससे प्राप्त निष्कर्ष की वैज्ञानिकता पर संदेह किया जाता है। जैसे भारतीय परिवेश में कई तरह की मतावलंबी अपनी अलग-अलग विश्वासों एवं मान्यताओं को श्रेष्ठ मानते हैं। यदि किसी खास वर्ग के लोगों की व्यवहारों का अध्ययन करते हैं पूर्वाग्रह वश निर्णय ले सकते हैं। यह इस विधि की वैज्ञानिकता को सीमित कर सकती है।

(3) गलत निष्कर्ष की संभावनाएँ :- इस विधि द्वारा प्राणी के व्यवहारों के आधार पर उसकी अन्य मानसिक क्रियाओं का आकलन किया जाता है। लेकिन इसमें अध्ययनकर्ता गलती कर सकता है। जैसे आँखों में आँसू सुख एवं दुख दोनों ही स्थितियों में आते हैं। अतः किसी के आँखों में आँसू देखकर यह निष्कर्ष निकालना कि वह व्यक्ति दुख में है, गलत हो सकता है। अतः प्राप्त परिणाम की वैधता संदेह के घेरे में आ जाती है।

(4) सीमित क्षेत्र :- सभी तरह के व्यवहारों का अध्ययन इस विधि से संभव नहीं है। इस विधि का क्षेत्र सीमित है। जैसे डाकुओं के सामाजिक व्यवहार, वेश्याओं के आन्तरिक व्यवहारों आतंकवादियों का व्यवहार आदि का अध्ययन संभव नहीं है। हालांकि सहभागी निरीक्षण से कुछ हद तक इसके तह तक जाना संभव है फिर भी इसकी पहुँच कुछ व्यवहारों तक आकर सीमित हो जाते हैं। स्त्री-पुरुष का लैंगिक व्यवहार (Sexual behave) का अध्ययन संभव नहीं है।

(4) <u>पुनरावृत्ति (Repetition)</u> :- इस विधि की एक प्रमुख विशेषता पुनरावृत्ति के गुण का पाया जाना है। चेतन अनुभव आत्मनिष्ठ एवं चंचल होती है। अतः अन्तःनिरीक्षण विधि में जहाँ पुनरावृत्ति का अभाव है वहीं इस विधि में पुनरावृत्ति का गुण विद्यमान है। क्योंकि व्यवहार का अध्ययन बार-बार किया जा सकता है। जैसे भय और प्रेम की स्थिति में प्राणी का व्यवहार कैसा होता है? सुख की स्थिति में व्यवहार कैसा होता है? इसकी बार-बार अध्ययन किया जा सकता है।

(5.) <u>सरल विधि</u> :- इस विधि की एक खास विशेषता इसकी सरलता है। अन्य विधियों में जहाँ दुरूहता है वहीं इस विधि में सरलता का गुण पाया जाता है। जैसे प्रयोग विधि में प्रयोगशाला का होना, नियंत्रण का होना आवश्यक है वहीं यह विधि आसान है।

(6) <u>समय और श्रम की बचत</u> :- इस विधि में श्रम एवं समय दोनों की बचत होती है क्योंकि कम समय में समूह व्यवहार का अध्ययन इसी विधि से संभव है। जैसे भीड़ व्यवहार का अध्ययन इस विधि से संभव है अन्य विधियों से नहीं। सभी तरह की सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन बड़ा ही आसानी से हम कर सकते हैं।

(7.) <u>मात्रात्मक अध्ययन</u> :- प्रेक्षण विधि से प्राप्त आकड़ों का सांख्यिकीय निरूपण संभव है। प्राप्त आकड़ें का सांख्यिकी के आधार पर विश्लेषित कर निष्कर्ष निकाला जाता है। अतः प्राप्त निष्कर्ष वैध होता है।

(8) <u>सामान्यीकरण</u> :- इस विधि से प्राप्त निष्कर्षों का सांख्यिकीय विश्लेषण संभव है। इसके साथ ही साथ कई व्यक्ति भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में अध्ययन कर सकते हैं जिससे विश्वसनीयता के साथ-साथ वैद्यता बढ़ जाती है, अतः प्राप्त निष्कर्ष का सामान्यीकरण संभव है।

दोष या सीमाएँ

उपर्युक्त गुणों के बावजूद यह विधि दोषरहित नहीं है। इसकी कुछ सीमाएँ हैं, जो निम्नवत हैं :-

(5.) अस्वभाविक अध्ययन :- इस विधि से प्राप्त निष्कर्ष में स्वभाविकता का अभाव पाया जाता है। जब व्यक्ति अथवा प्रयोज्य जान जाता है कि उसके व्यवहारों का अध्ययन किया जा रहा है तो वैसी स्थिति में बनावटी व्यवहार प्रकट करने लगता है। यानि वास्तविक व्यवहार प्रकट ही नहीं करता है। ऐसी हालात में प्राप्त निष्कर्ष संदेहास्पद हो जाता है। हलाँकि आज-कल इस तरह की दोषों से बचने के लिये अन्य तकनीकों का सहारा लिया जाने लगा है फिर भी यह विधि इस दोष से पूर्णत: मुक्त नहीं हो पाई है।

उपर्युक्त गुण-दोषों की समालोचनात्मक ढंग से अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि यह मनोविज्ञान की एकमात्र विधि न होकर एक महत्वपूर्ण विधि अवश्य ही है। इसकी सीमाओं अथवा दोषों को दूर करने के लिये इसके विविध प्रारूपों का इस्तेमाल आवश्यकता-नुसार किया जा सकता है। कुछ ऐसी क्रियाएँ या व्यवहार होते हैं जिनका अध्ययन केवल प्रेक्षण विधि से ही किया जा सकता है। इसीलिए प्रेक्षण विधि की प्रासंगिकता आज तक बनी हुई है और भविष्य में भी बनी रहेगी। अत: यह सत्य ही कहा गया है -

"Science begins with observation and must ultimately returns to observation for its final validation."

डॉ० रमेन्द्र कुमार सिंह
05.04.2020
विभागाध्यक्ष
मनोविज्ञान विभाग,
डी० के० कालेज, डुमराँव
(बक्सर)।